Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN: 2584-184X

Research Paper

शिक्षा और संस्कृति: भारतीय ज्ञान परंपरा और मुसहर समुदाय

सुमन पाल[1*], डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर[2]

[1]पी-एच.डी. स्कॉलर, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

[2]प्रोफेसर, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

Corresponding Author: *सुमन पाल

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.14011201

सारांश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनः वैश्विक पहचान दिलाने हेतु कृत संकल्पित है। भारतीय ज्ञान परंपरा प्राचीनकाल से ही सम्पूर्ण विश्व को रास्ता दिखाया है। भारतवर्ष के विश्वगुरु कहलाने का आधार इसकी आर्ष परम्परा-रही है। हमारे देश के ऋषि, मुनि एवं आचार्यों ने भारत सहित पूरे विश्व को ज्ञान रूपी प्रकाश से हमेशा आलोकित किया है। भारतीय लोक परंपरा और संस्कृति के मूल तत्त्व भारतीय ज्ञान परंपरा को वैश्विक स्तर पर अद्वितीय बनाते हैं। भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना में कई संस्कृतियाँ माला में मोती की तरह गुथी हुई हैं। एक अद्वितीय भौगोलिक अवसंरचना में भी अपनी सामाजिक-सांस्कृतिक विशेषताओं को बनाए रखकर ये विभिन्न संस्कृतियाँ न केवल भारतीय सौन्दर्य को निखारती हैं बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा को समृद्ध भी करती हैं। ऐसी ही एक लोक संस्कृति मुसहर समुदाय की है। मुसहर समुदाय की एक विशिष्ट जीवन संस्कृति है, जोकि मुसहर समुदाय को एक ख़ास पहचान दिलाती है। मुसहर समुदाय मुख्यतः नेपाल और भारत के तराई इलाकों में निवास करता है। इस समुदाय की सामाजिक-शैक्षिक स्थिति में आज़ादी के बाद से अब तक काफी सुधार हुआ है। वर्ष 1961 में इनकी साक्षरता केवल 2 % थी, जो 2011 की जनगणना तक 22% हो गई है। अन्य समुदायों की तुलना में फिर भी वे बहुत पिछड़े हुए हैं। मुसहर समुदाय मुख्य समाज में हाशिये पर है। इस शोध पत्र में मुसहर समुदाय की जीवन जीने की परिपाटी अर्थात उनके अद्वितीय जीवन दर्शन और संस्कृति का अध्ययन किया गया है। इसके साथ ही साथ उनकी ज्ञान प्रणाली, जीवन कौशल विकास और सामाजिक-शैक्षिक समावेशन की स्थिति का भी विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

Manuscript Info.

- ✓ **ISSN No:** 2584-184X
- ✓ **Received:** 30-07-2024
- ✓ **Accepted:** 19-08-2024
- ✓ **Published:** 30-10-2024
- ✓ **MRR:2(10):**2024;36-42
- ✓ **©2024, All Rights Reserved.**
- ✓ **Peer Review Process:** Yes
- ✓ **Plagiarism Checked:** Yes

How To Cite

सुमन पाल, गोपाल कृष्ण ठाकुर. शिक्षा और संस्कृति: भारतीय ज्ञान परंपरा और मुसहर समुदाय. Indian Journal of Modern Research and Reviews: 2024;2(10):36-42.

मुख्य शब्द: भारतीय ज्ञान परंपरा, मुसहर संस्कृति, हाशिये का जीवन, सामाजिक समावेशन और शैक्षिक विकास।.

प्रस्तावना

वैश्विक स्तर पर भारत को योग और विभिन्न आध्यात्मिक विषयों में अपनी उपलब्धियों के लिए व्यापक रूप से पहचाना जाता है। भारत ने अपनी विशिष्ट ज्ञान परम्पराओं से सम्पूर्ण विश्व को सदैव आलोकित किया है। भारतीय बौद्धिक विरासत रचनात्मकता को बढ़ावा देता है। भारतीय ज्ञान परंपरा स्वदेशी ज्ञान की एक व्यापक व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा एक अद्वितीय ज्ञानमीमांसा को प्रकट करती है। जोकि ज्ञान के प्राचीन ग्रंथों, अर्थात् वैदिक साहित्य से शुरू होकर, राष्ट्र के स्वदेशी और आदिवासी आख्यानों तक, भारतीय ज्ञान विविधता को समाहित करते हुए एक सातत्य के रूप में वैश्विक ज्ञान पटल पर मौजूद रहा है। बौद्धिक संसाधनों का एक व्यापक भंडार न केवल संस्कृत, पाली और प्राकृत की भाषाओं में, बल्कि सभी स्वदेशी भारतीय भाषाओं में भी उपलब्ध

© 2024 सुमन पाल, डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

है। भारतीय ज्ञान परंपरा में मूलभूत सिद्धांत, वैज्ञानिक जांच, इंजीनियरिंग और तकनीकी प्रगति के साथ-साथ मानविकी और सामाजिक विज्ञान के विविध आयाम सम्मिलित हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली 3500 साल पूर्व से प्रारम्भ होकर मौलिक चिंतन और आत्म ज्ञान आधारित विकास की प्रक्रिया से गुजरी है। इसमें खगोल विज्ञान, आयुर्वेद, योग, गणित, भाषा और भाषा विज्ञान, धातु विज्ञान, रस-शास्त्र, लोक प्रशासन, युद्ध प्रौद्योगिकी, प्रबंधन विज्ञान सहित विषयों का एक व्यापक आयाम सम्मिलित है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली एक विशिष्ट भारतीय तरीका है, जो टिकाऊ है और सभी के कल्याण के लिए प्रयास करता है। यदि हम इस सदी में 'विश्वगुरु' बनना चाहते हैं, तो यह जरूरी है कि हम अपनी विरासत का व्यापक ज्ञान फिर से हासिल करें और पूरी दुनिया के सामने काम करने के 'भारतीय तरीके' का प्रदर्शन शानदार ढंग से प्रदर्शन करें। इसलिए, समकालीन विश्व के लिए भारतीय ज्ञान प्रणालियों का कायाकल्प करने और उन्हें मुख्यधारा में लाने की आवश्यकता है। भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रति मौजूदा मानसिकता में बदलाव लाने और इसके बारे में वैश्विक स्तर पर पुनः जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता है। ताकि सम्पूर्ण विश्व को यह भान हो सके कि वैश्विक शांति और सौहार्द की स्थापना के लिए भारतीय ज्ञान प्रणाली के वैश्विक सरोकार को समझने बिना आतंकवाद, अशांति और सीमा विवाद जैसे अंतरराष्ट्रीय समस्याओं से छुटकारा पाना संभव नहीं है।

भारतीय ज्ञान परंपरा को इसकी अनूठी विशेषताओं, सीखने के लिए वातावरण, विशिष्ट ग्रंथों और उनके संबंधित वर्गीकरणों की विशेषता के आधार पर वैश्विक अकादमिक दुनिया में विशिष्ट स्थान प्राप्त हुआ है। ऐतिहासिक रूप से, भारत को अपने समृद्ध ज्ञान, परंपरा और संस्कृति के लिए पहचाना जाता रहा है। प्राचीन सभ्यताओं ने ज्ञान के क्षेत्र में भारत के योगदान को स्वीकार किया है। ज्ञान पर चर्चा करते समय, यह मौलिक रूप से भाषा, दर्शन, ज्ञान की अनिवार्यता, लोककथाओं और मूर्तिकला के साथ जुड़ा हुआ है। भारत में, गुरुकुल प्रणाली के माध्यम से होने वाले ज्ञान के संचरण के साथ, आचार्य, ऋषि, ग्रंथ आदि का एक निरंतर वंश मौजूद है। विद्वान वेदों, वेदांगों, स्मृतियों और स्तुतियों से जुड़े हुए थे। शिक्षा की पद्धति मुख्य रूप से मौखिक थी। एक गहन गुरु-शिष्य परंपरा स्थापित की गई। वैदिक युग के बाद से, ज्ञान की परंपरा उच्च स्तर पर पहुंच गई, जिसका उदाहरण तक्षशिला, नालंदा और विक्रमशिला विश्वविद्यालय जैसे संस्थानों द्वारा दिया जाता है शर्मा (2022)।

भारतवर्ष के विश्वगुरु कहलाने का आधार इसकी आर्ष-परम्परारही है। हमारे देश के ऋषि, मुनि एवं आचार्यों ने भारत सहित पूरे विश्व को ज्ञान रूपी प्रकाश से हमेशा आलोकित किया है। हमारे देश में ज्ञान को एक ऐसा प्रकाश स्रोत माना जाता है, जो मनुष्य का उसके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मार्गदर्शन करता है। हमारे प्राचीन ग्रंथों में ज्ञान-विद्या अर्थात शिक्षा को मुक्तिदायनी की संज्ञा से अभिभूत किया गया है। विष्णु पुराण में 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात 'शिक्षा ही वह साधन है, जो मनुष्य को अज्ञानता तथा सर्व बंधनों से मुक्त कराती है' के रूप में प्रस्तुत किया गया है। शिक्षा को आदि शंकराचार्य ने भी इसी रूप में अभिव्यक्त किया है। भारत में वैदिक काल से ही एक सुदृढ़ शिक्षा प्रणाली रही है, जिसमें समय के साथ-साथ परिवर्तन भी होता गया। फिर भी जन शिक्षा का माहौल तैयार नहीं हुआ। धीरे-धीरे शिक्षा की अनिवार्यता के लिए प्रयास होने लगे। गोपाल कृष्ण गोखले ने वर्ष 1911 में अंग्रेजों के राज में प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य एवं निःशुल्क करने की कोशिश की। बाद में महात्मा गांधी जी ने भी वर्धा शिखर सम्मेलन (1937) में शिक्षा संबंधी अपने विचारों से सभी को अवगत कराया। बाद में उन्हीं के विचारों के आधार पर बुनियादी शिक्षा प्रणाली की शुरुआत हुयी। गांधी जी 7-14 वर्ष तक के समस्त बालकों की शिक्षा अनिवार्य करने के साथ ही साथ शिल्प एवं हस्त कला की बात किया। गांधी जी का मानना था कि बिना हस्त एवं शिल्प की पढ़ाई कराये हम युवाओं को स्वरोजगार के लिए प्रेरित नहीं कर पाएंगे। गांधी जी सभी के लिए शिक्षा के द्वार खोलना चाहते थे। क्योंकि भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक विशिष्ट वर्ग का बोलबाला था। शिक्षा केवल उच्च वर्ग तक सीमित थी। 15 अगस्त, 1947 को आज़ादी मिलने के बाद तत्कालीन भारतीय सरकार ने शिक्षा व्यवस्था को व्यवस्थित ढंग से सुधारने हेतु महत्त्वपूर्ण कदम उठाया । हमारे राष्ट्र के वरिष्ठ नेताओं ने शिक्षा प्रसार को सबसे महत्वपूर्ण कार्य समझा। मंथन के फलस्वरुप भारतीय शिक्षा के उद्भव काल में जिन नवीन प्रवृतियों का जन्म हुआ उनमें सर्वप्रथम प्रौढ़ शिक्षा अथवा समाज शिक्षा का ही स्थान रहा है उन्ही प्रवृत्तियों की पृष्ठभूमि में सार्वभौमिक शिक्षा का उदय हुआ है। सभी के लिए शिक्षा समय की मांग रही है।

भारतीय ज्ञान परंपरा के विकास में इसकी लोक संस्कृतियों का विशेष योगदान रहा है। प्राचीन वैदिककाल से लेकर आधुनिक समय तक भारत विविध ज्ञान प्रणालियों और परंपराओं की जननी रहा है। ये लोक संस्कृतियाँ भारत के ज्ञान भंडार का विकास और विस्तार करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। इन्हीं संस्कृतियों में से एक संस्कृति मुसहर समुदाय की भी है। विचारणीय है कि वर्तमान समय में भी भारत विभिन्न कुप्रथाओं एवं गुलामी वाली मानसिकता से संपूर्णता में उबर नहीं पाया है। आज भी विभिन्न समुदायों तक शिक्षा की पहुँच नहीं हो पायी है। मुसहर समुदाय उनमें से एक ज्वलंत उदाहरण है। भारत के उत्तर प्रदेश राज्य में मुसहर समुदाय अनुसूचित जाति के अंतर्गत सूचीबद्ध है। हालांकि अनुसूचित जाति के अंतर्गत आने वाली विभिन्न जातियाँ यथा- चमार, पासी, धोभी इत्यादि धीरे-धीरे मुख्यधारा में सम्मिलित हो गई हैं। लेकिन मुसहर समुदाय आज भी मुख्यधारा से सम्बद्ध नहीं हो पाया है। मुख्यधारा और मुसहर समुदाय के बीच एक खाई सी बन गई है। मुसहर समुदाय मुख्यधारा के साथ उठने-बैठने की कल्पना मात्र से सिहर उठता है। यद्यपि केंद्र एवं राज्य सरकारें लगातार अपनी कल्याणकारी योजनाओं से मुसहरों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को सुधारने का प्रयास करती रहीं हैं तथापि मुसहर समुदाय सामाजिक-आर्थिक रूप से बहुत अधिक पिछड़ा हुआ है। वे अपने अधिकारों के प्रति सचेत नहीं हैं, जिसका फायदा उठाकर कर्मचारी एवं अधिकारीगण उनके हिस्से का लाभ भी अन्य लोंगों को उपलब्ध करवा देते हैं। परिणामस्वरूप मुसहर समुदाय आज भी खस्ताहाल है। इसका सबसे बड़ा कारण मुसहरों का अशिक्षित होना है। यदि वे शिक्षित होते तो अपने अधिकारों का सदुपयोग करते और मुख्यधारा के साथ मिलकर देश के विकास में अपना बहुमूल्य योगदान अदा करते। लेकिन शिक्षा तक उनकी पहुँच काफी दूर है। अतः शोधार्थी को यह जानने की जिज्ञासा हुई कि मुसहर समुदाय की वर्तमान शैक्षिक स्थिति कैसी है, आज़ादी के बाद से विभिन्न सरकारी प्रयासों के संदर्भ में उनकी शैक्षिक प्रगति की क्या स्थिति है। वे शिक्षा को किस नजरिये से देखते

© 2024 सुमन पाल, डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

हैं अर्थात शिक्षा के प्रति उनकी अभिवृत्ति कैसी है। उनकी शैक्षिक आकांक्षा का स्तर कैसा है। इसीलिए शोधार्थी उपरोक्त समस्त सवालों को इस अध्ययन का मुख्य सरोकार मानते हुये अपना निर्वचन प्रस्तुत किया है।

मुसहर समुदाय की सामाजिक-शैक्षिक परिदृश्य:

मुसहरों की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक स्थिति अन्य अनुसूचित जातियों की तुलना में आज भी बहुत गिरी हुई है। बिना शिक्षा का स्तर ऊंचा किए मुसहरों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को ऊंचा कर पाना और उनकी सामाजिक समावेशिता को स्थापित कर पाना संभव नहीं है। शिक्षा को एक सामाजिक सुधार और आर्थिक विकास के एक उपकरण के रूप में स्वीकार करते हुए मुसहरों के लिए शिक्षा व्यवस्था हेतु अतिरिक्त प्रयास करने किया जाना चाहिए। 'शिक्षा तकनीकी विकास लाने के साथ-साथ संपूर्ण दुनिया से जुड़ने का अवसर प्रदान करती है इसके अलावा शिक्षा को स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय और समान अवसरों तथा सामाजिक मूल्यों पर आधारित एक बेहतर सामाजिक परिवर्तन के लिए भी महत्वपूर्ण माना जाता है' (राधा कृष्ण और कुमारी 1989)। वास्तव में 'शिक्षा व्यक्ति को न केवल दक्षता स्तर बढ़ाने की दिशा में कौशल विकसित करने में सक्षम बनाती है बल्कि उसके व्यक्तित्व को सकारात्मक रूप से बदलने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विशेष रूप से व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा महत्वपूर्ण रूप से मदद करती है' (पासवान और जयदेव 2002)। भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था होने के बावजूद मुसहरों की राजनीतिक सहभागिता केवल और केवल वोट देने तक सीमित है। वे मुख्य समाज से आज भी कटे हुए हैं।

भारत में मुसहर समुदाय की भौगोलिक अवस्थिति:

भारत में मुसहर समुदाय मुख्यतः उत्तर-पूर्वी राज्यों यथा-उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, उड़िसा और त्रिपुरा में रहते हैं। मुसहर समुदाय समान्यतः तराई और तटीय इलाकों में मुख्य समाज से कटकर रहते हैं। ये अधिकांशतः हाशिये पर जीवन-यापन करते हैं। क्योंकि इनका आवास मूलतः प्राकृतिक वातावरण में होता है, इसलिए इनकी आश्रितता प्राकृतिक संसाधनों पर सर्वाधिक होती है। अतः जब प्राकृतिक आपदाएँ आती हैं, तो सबसे पहले यही लोग प्रभावित भी होते हैं। भारत में मुसहर समुदाय की भौगोलिक अवस्थिति को चित्र-1 में प्रस्तुत किया गया है।

चित्र 1: मुसहर समुदाय की भौगोलिक अवस्थिति

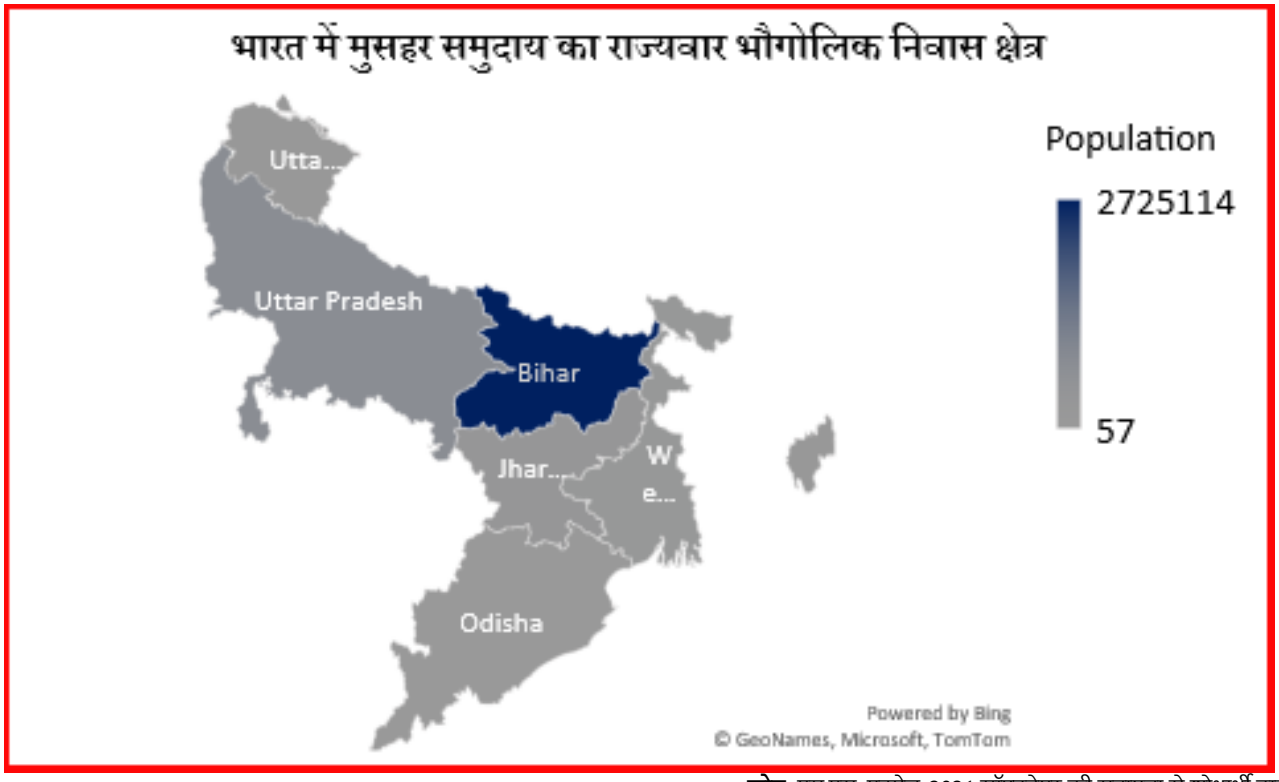

स्रोत: एम.एस. एक्सेल-2021 सॉफ्टवेयर की सहायता से शोधार्थी द्वारा निर्मित

भारत में मुसहर समुदाय की जनसंख्या:

भारतीय जनगणना-2011, जोकि अद्यतन है, के अनुसार वर्तमान समय में भारत के केवल सात राज्यों यथा-उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा एवं त्रिपुरा में ही निवास करते हैं। उक्त राज्यों में मुसहर समुदाय की राज्यवार जनसंख्या का विवरण तालिका-1 में प्रस्तुत किया गया है-

© 2024 सुमन पाल, डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

तालिका 1: मुसहर समुदाय की जनसंख्या

राज्य	कुल जनसंख्या			शहरी जनसंख्या			ग्रामीण जनसंख्या		
	पु.	म.	कुल	पु.	म.	कुल	पु.	म.	कुल
बिहार	1407557	1317557	**2725114**	48158	45273	**93431**	1359399	1272284	**2631683**
झारखंड	27251	25845	**53096**	3799	3483	**7282**	23452	22362	**45814**
उड़ीसा	37	20	**57**	17	16	**33**	20	4	**24**
त्रिपुरा	178	149	**327**	52	50	**102**	126	99	**225**
उत्तरप्रदेश	133149	123986	**257135**	4120	3781	**7901**	129029	120205	**249234**
उत्तराखंड	397	321	**718**	111	86	**197**	286	235	**521**
बंगाल	10708	10241	**20949**	1789	1728	**3517**	8919	8513	**17432**

स्रोत: भारत की जनगणना (वर्ष 1961-2011) के प्रदत्तों की सहायता से शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित

उपर्युक्त तालिका-1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि बिहार के ग्रामीण क्षेत्र में 1359399 पुरुष, 1272284 महिला तथा कुल 2631683 मुसहर, शहरी क्षेत्र में 48158 पुरुष, 45273 महिला तथा कुल 93431 मुसहर और बिहार में कुल 1407557 पुरुष, 1317557 महिला तथा 2725114 (89.132%) कुल मुसहर निवास करते हैं। जोकि भारत में शहरी-ग्रामीण और महिला-पुरुष स्तर पर मुसहर निवास करने वाले राज्यों में मुसहर समुदाय की सर्वोच्च संख्या है। अतः बिहार मुसहर जनसंख्या के आधार पर प्रथम स्थान पर है। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश में कुल 257135 (8.410%) मुसहर और झारखंड में कुल 53096 (1.737%) मुसहर निवास करते हैं। उत्तर प्रदेश और झारखंड कुल मुसहर आबादी के आधार क्रमशः द्वितीय और तृतीय स्थान पर हैं। मुसहर निवास करने वाले राज्यों में मुसहर समुदाय की कुल जनसंख्या के आधार पर उड़ीसा (57) , त्रिपुरा (327) और उत्तराखंड (718) नीचे से क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर हैं।

मुसहर समुदाय का दशकीय जनसंख्या वृद्धि:

मुसहर समुदाय भारत में आज़ादी से पहले से ही निवास कर रहा है। सिंह (2016) के अनुसार वर्ष 1891 में लगभग 6 लाख 22 हज़ार, वर्ष 1901 में लगभग 6 लाख 6 हज़ार, वर्ष 1911 में लगभग 6 लाख 99 हज़ार, वर्ष 1921 में लगभग 6 लाख 35 हज़ार और वर्ष 1931 में लगभग 8 लाख 11 हज़ार मुसहर उत्तर भारत में रहते थे तथा 1941 व 1951 की जनगणना में मुसहर समुदाय की संख्या संबंधी आंकड़े उपलब्ध नहीं है। हम सभी जानते हैं कि 15 अगस्त, 1947 को भारत आज़ाद हुआ तथा आज़ादी के बाद भारतीय राज्य क्षेत्र भारतीय संविधान के अंतर्गत पुनर्परिभाषित हुआ। इसीलिए शोधार्थी द्वारा मुसहर समुदाय की वस्तुस्थिति का अध्ययन करने के लिए भारत की आज़ादी के बाद के उपलब्ध प्रदत्तों का ही प्रयोग किया गया है। भारत की स्वतन्त्रता के बाद वर्ष 1951 की जनगणना में मुसहर समुदाय की संख्या संबंधित प्रदत्त उपलब्ध नहीं होने के कारण मुसहर समुदाय की दशकीय जनसंख्या वृद्धि का अध्ययन करने हेतु वर्ष 1961 की जनगणना संबंधित प्रदत्तों से लेकर वर्ष 2011 (भारत का अद्यतन जनगणना वर्ष) तक जनगणना संबंधित प्रदत्तों का उपयोग किया गया है। मुसहर समुदाय का दशकीय जनसंख्या को चित्र-2 में तथा भारत और मुसहर समुदाय की दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर को चित्र-3 में प्रस्तुत किया गया है-

चित्र-2: मुसहर समुदाय का दशकीय जनसंख्या

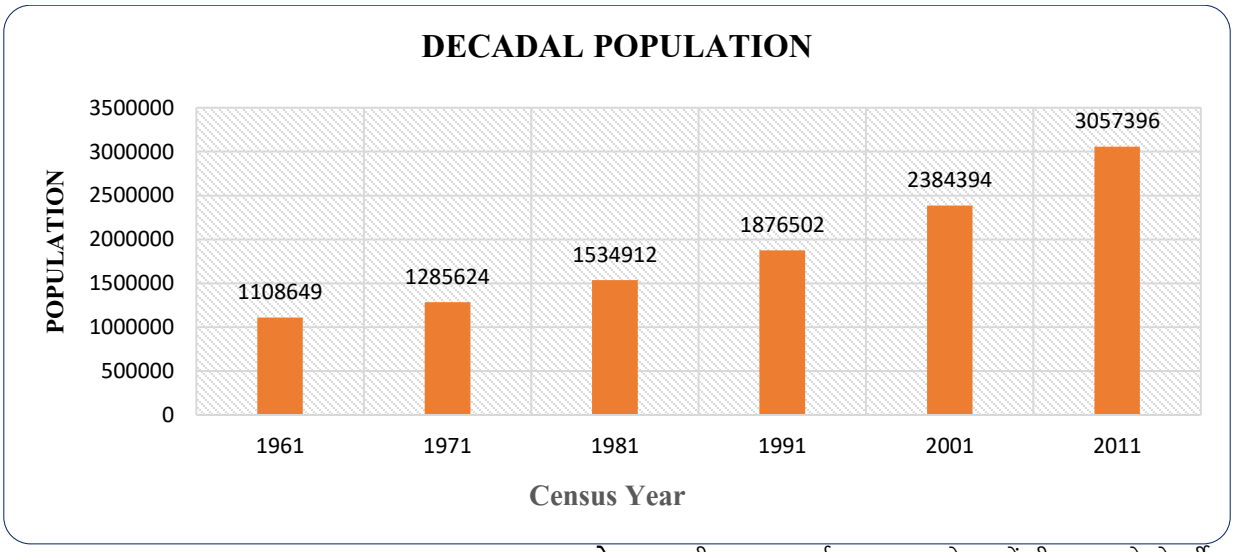

स्रोत: भारत की जनगणना (वर्ष 1961-2011) के प्रदत्तों की सहायता से शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित

चित्र-3: भारत और मुसहर समुदाय की दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर

© 2024 सुमन पाल, डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

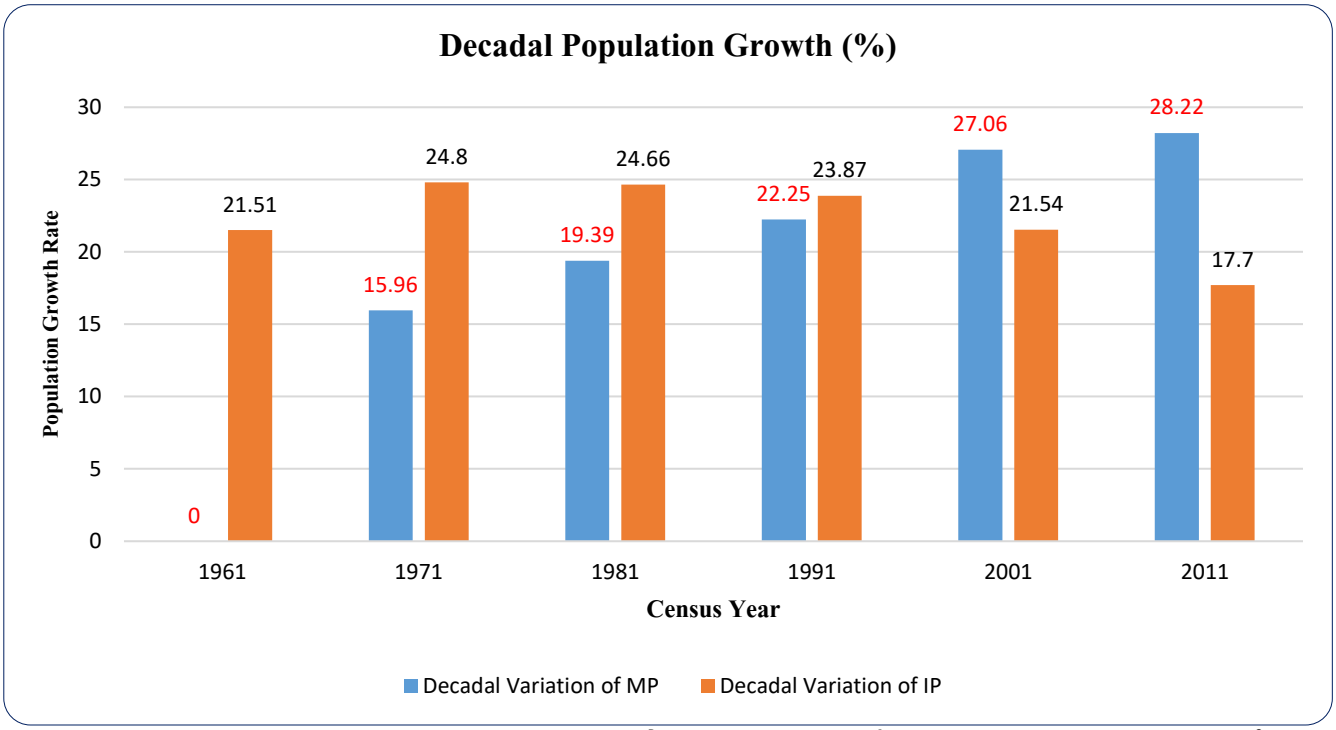

स्रोत: भारत की जनगणना (वर्ष 1961-2011) के प्रदत्तों की सहायता से शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित

उपर्युक्त चित्र-2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि वर्ष 1961 की जनगणना के अनुसार मुसहर समुदाय की कुल जनसंख्या 1108649 है। इसी प्रकार वर्ष 1971 में मुसहर समुदाय की जनसंख्या 1285624, वर्ष 1981 में 1534912, वर्ष 1991 में 1876502, वर्ष 2001 में 2384394 तथा वर्ष 2011 में 3057396 है। दशक 1961-71 के मध्य मुसहर समुदाय की आबादी में 176975 की वृद्धि हुई, जोकि लगभग 15.96% है। इसी प्रकार दशक 1971-81 के मध्य मुसहर आबादी में 249288 (लगभग 19.39%) की वृद्धि, दशक 1981-91 में 341590 (लगभग 22.26%) की वृद्धि, दशक 1991-2001 में 507892 (लगभग 27.07%) की वृद्धि तथा दशक 2001-11 में 673002 (लगभग 28.23**%)** की वृद्धि दर्ज़ की गई। इसी प्रकार चित्र-3 में मुसहर समुदाय और भारत की दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर को देखा जा सकता है। भारत की वर्तमान दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर (17.7%) की तुलना में मुसहर समुदाय की वर्तमान दशकीय (2001-11) जनसंख्या वृद्धि दर (28.23%) है।

मुसहर समुदाय का शैक्षिक समावेशन (1961-2011 तक):

मुसहर समुदाय की वर्तमान साक्षरता दर साक्षरता बहुत कम (22%) होने का एक सबसे महत्त्वपूर्ण कारण उनकी शैक्षिक समावेशन की धीमी गति है। भारत की आज़ादी के 77 वर्ष बाद भी मुसहर समुदाय का औपचारिक शिक्षा में समावेशन बहुत कम है। मुसहर समुदाय के शैक्षिक आंकड़ों को देखकर लगता है कि मुसहर समुदाय का शैक्षिक रुझान प्रारम्भ से ही नगण्य रहा है। इसका कारण उनका सामाजिक-आर्थिक पिछड़पन हो सकता है। क्योंकि जिस समुदाय को मुख्य समाज से कटकर हाशिये पर रहने के लिए मजबूर कर दिया जाएगा अर्थात सामाजिक बहिष्कार कर दिया जाएगा और जिसके पास अपनी निजी जमीन नहीं होगी, जिसे पेट भरने के लिए प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहना पड़ेगा, जंगलों में निवास करना पड़ेगा, वह पढ़ने-लिखने के बारे में कैसे सोच सकता है। हालांकि धीरे-धीरे मुसहर समुदाय जंगलों से निकलकर गाँव के अंतिम छोर पर, बिलकुल किनारे, तालाबों-नदियों के तटों पर झुग्गी-झोपड़ी डालकर रहते हुए मजदूरी करके अपनी न्यूनतम जरूरतों को पूरा करने लगे। सरकारों एवं गैर सरकारी संगठनों के प्रयास से मुसहर समुदाय भी औपचारिक शैक्षिक प्रयासों से जुड़ने लगा। फिर भी मुसहर समुदाय का शैक्षिक समावेशन की गति बहुत अधिक धीमी है। भारत की आज़ादी के बाद से मुसहर समुदाय के शैक्षिक समावेशन की विकास यात्रा को अधोलिखित तालिका-2 में प्रस्तुत किया गया है-

© 2024 सुमन पाल, डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

तालिका 1: मुसहर समुदाय का शैक्षिक समावेशन (1961-2011 तक)

शैक्षिक स्तर	जनगणना वर्ष	ग्रामीण		शहरी		सम्पूर्ण (%)
		पुरुष (% में)	महिला (% में)	पुरुष (% में)	महिला (% में)	
निरक्षर	1961	96.41	99.41	93.77	98.74	97.86
	1971	97.12	99.80	91.11	99.37	98.33
	1981	96.13	99.70	90.64	98.62	97.77
	1991	94.07	99.12	83.81	93.98	94.07
	2001	89.18	96.86	84.90	93.75	92.78
	2011	73.56	82.99	74.52	83.11	78.14
बिना शैक्षिक स्तर के साक्षर	1961	3.24	0.58	5.23	0.98	1.94
	1971	1.66	0.13	3.95	0.44	0.95
	1981	2.31	0.25	4.03	0.80	1.33
	1991	2.00	0.45	3.71	2.29	2.00
	2001	1.37	0.80	1.62	0.90	1.10
प्राइमरी or जूनियर बेसिक	1961	0.33	0.02	0.90	0.23	0.18
	1971	1.10	0.07	3.50	0.19	0.64
	1981	1.29	0.05	3.91	0.48	0.73
	1991	1.83	0.24	4.00	1.56	1.83
	2001	8.67	2.27	11.50	4.95	5.66
मेट्रिक्युलेशन हायर सेकेन्डरी	1961	0.03	NA	0.10	0.05	0.02
	1971	0.11	NA	1.14	NA	0.07
	1981	0.26	NA	1.27	0.09	0.15
	1991	2.00	0.17	7.63	2.02	2.00
	2001	0.68	0.06	1.58	0.35	0.40
ग्रेजुएट एंड एबव	1961	NA	NA	0.01	NA	NA
	1971	NA	NA	0.30	NA	0.01
	1981	0.01	NA	0.15	0.01	0.01
	1991	0.10	0.02	0.85	0.16	0.10
	2001	0.09	0.01	0.41	0.06	0.06

स्रोत: सिंह(2016)

उपर्युक्त तालिका-2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि वर्ष 1961 में ग्रामीण मुसहर पुरुष 96.41% तथा मुसहर महिला 99.41% निरीक्षर थीं, शहरी मुसहर पुरुष 93.77% और शहरी मुसहर महिला 98.74% निरीक्षर थी, कुल मिलाकर 1961 में 97.86% मुसहर निरीक्षर थे। इसी प्रकार वर्ष 1971 में ग्रामीण मुसहर पुरुष 97.12%, ग्रामीण मुसहर महिला 99.80 %, शहरी मुसहर पुरुष 91.11%, शहरी मुसहर महिला 99.37 % तथा कुल 98.33 % मुसहर निरीक्षर थे। वर्ष 1981 में ग्रामीण मुसहर पुरुष 96.13%, ग्रामीण मुसहर महिला 99.70%, शहरी मुसहर पुरुष 90.64%, शहरी मुसहर महिला 98.62% तथा कुल 97.7% मुसहर निरीक्षर थे। वर्ष 1991 में ग्रामीण मुसहर पुरुष 94.07%, ग्रामीण मुसहर महिला 99.12%, शहरी मुसहर पुरुष 83.81%, शहरी मुसहर महिला 93.98% तथा कुल 94.07 % मुसहर निरीक्षर थे। वर्ष 2001 में ग्रामीण मुसहर पुरुष 89.8%, ग्रामीण महिला मुसहर 96.86%, शहरी मुसहर पुरुष 84.90%, शहरी मुसहर महिला 93.75% तथा कुल 92.78% मुसहर निरीक्षर थे। वर्ष 2011 में ग्रामीण मुसहर पुरुष 73.56%, ग्रामीण मुसहर महिला 82.99 %, शहरी मुसहर पुरुष 74.52%, शहरी मुसहर महिला 83.11% तथा कुल 78.14% मुसहर निरक्षर थे। 1961 से लेकर 2001 तक के अनुसार मुसहर समुदाय के उपलब्ध शैक्षिक आंकड़ों (तालिका-1) का अवलोकन करने से यह भी स्पष्ट है कि बिना किसी शैक्षिक स्तर के वर्ष 1961 में केवल 1.94% मुसहर साक्षर थे, जोकि 2001 में घटकर 1.10% हो गया है। इसी प्रकार प्राइमरी और जूनियर बेसिक तक की पढ़ाई करने वाले मुसहरों की संख्या के आधार पर देखा जाय तो वर्ष 1961 में उनकी संख्या केवल 0.8% थी; जोकि 2001 में बढ़कर 5.6% तक पहुँच पाई है। इसी प्रकार हायर सेकेंडरी तक की शिक्षा ग्रहण करने वाली मुसहर आबादी वर्ष 1961 में महज़ 0.02% थी; जो वर्ष 2001 में बढ़कर 0.40% तक पहुंची है। यदि हम ग्रेजुएशन या उसके ऊपर की कक्षाओं की बात करें तो वर्ष 1961 में एक भी मुसहर ग्रेजुएट नहीं था। ग्रेजुएट या उसके ऊपर तक की पढ़ाई करने वाले मुसहर वर्ष 1971 में 0.01% से बढ़कर वर्ष 2001 में 0.06% तक पहुँच पाये हैं। उक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि मुसहर समुदाय वर्तमान समय में लगभग 22% ही साक्षर है। वर्ष 2001 तक प्राइमरी एवं बेसिक जूनियर में 5.66%, हायर सेकेंडरी में 0.40 तथा ग्रेजुएशन या उसके ऊपर महज़ 0.06% मुसहर ही शिक्षा ग्रहण कर पाये हैं। मुसहर समुदाय का शैक्षिक समावेशन बेसिक जूनियर तक केवल 5.66% तक हो पाया है। इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि मुसहर आबादी का शैक्षिक समावेशन बहुत कम (लगभग नगण्य) हो पाया है। अतः मुसहर समुदाय के शैक्षिक समावेशन को बढ़ाने के लिए सरकार और गैर सरकारी संगठनों को गंभीरतापूर्वक सार्थक प्रयास करने की जरूरत है, ताकि मुख्य समाज

© 2024 सुमन पाल, डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

में उनका भी समावेशन तेज गति से सके और भारतीय संविधान में अंतर्निहित समतामूलक समाज की परिकल्पना को हकीकत में तब्दील किया जा सके। शिक्षा को सामाजिक सुधार और आर्थिक विकास के एक उपकरण के रूप में स्वीकार करते हुए मुसहर समुदाय के लिए बेहतर शिक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने हेतु अतिरिक्त प्रयास किया जाना चाहिए। अतः मुसहर समुदाय के शैक्षिक समावेशन की गति तेज करते हुये उन्हें मुख्य समाज में सम्मिलित किया जाना चाहिए, ताकि समाज की विविधता में और अधिक निखार आ सके तथा सभी को मिलकर एक खूबसूरत समतामूलक समाज का निर्माण संभव हो सके।

निष्कर्ष

भारत में मुसहर समुदाय मुख्य धारा के समाज से कटकर हाशिए पर पड़े समूह के रूप में उत्तर-पूर्वी राज्यों में निवास करता है। लगभग 97% मुसहर समुदाय केवल दो राज्यों (बिहार और उत्तर प्रदेश) में निवास करता है। मुसहर समुदाय की अधिकांश आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में विशेषकर तालाबों-नदियों-नालों के किनारे, गांवों में सबसे कटकर सुदूर किनारे अंतिम छोर पर निवास करती है। उनकी आबादी भारत की वर्तमान दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर (17.7%) की तुलना में वर्ष 2001-2011 के दौरान लगभग 28.23% की दर से बढ़ी है। मुसहर समुदाय की शैक्षिक स्थिति शुरुआत से ही बहुत खराब रही है। आज़ादी के बाद वर्ष 1961 में मुसहर समुदाय की साक्षरता दर केवल 2.1% थी जोकि वर्ष 2011 में महज़ 21.9% है। मुसहर समुदाय शैक्षिक दृष्टिकोण से अपने सामाजिक वर्ग अर्थात अनुसूचित जाति वर्ग (66%) तथा भारत (73%) की साक्षरता से बहुत अधिक पिछड़ा हुआ है। वास्तव में अनुसूचित जाति वर्ग की साक्षरता दर (66%) तो मुसहर समुदाय की साक्षरता दर (21.9%) से तीन गुना है। मुसहर समुदाय का शैक्षिक समावेशन बहुत कम हुआ है। वर्तमान समय (जनगणना वर्ष-2011 तक) में लगभग 78% मुसहर आबादी निरक्षर है। केवल 5.66% मुसहर प्राइमरी-जूनियर तक, 0.40% मुसहर सेकेंडरी तक और केवल 0.06% मुसहर ग्रेजुएशन या उसके ऊपर की पढ़ाई किए हैं। इससे पता चलता है कि 30 लाख से अधिक जनसंख्या वाला मुसहर समुदाय किस तरह शैक्षिक पिछड़पन की गिरफ़्त में फँसा हुआ है। अतः मुसहर समुदाय के शैक्षिक समावेशन को बढ़ाने के लिए सरकार और गैर सरकारी संगठनों को गंभीरतापूर्वक सार्थक प्रयास करने की जरूरत है, ताकि मुख्य समाज में उनका भी समावेशन तेज गति से हो सके और भारतीय संविधान में अंतर्निहित समतामूलक समाज की परिकल्पना को हकीकत में तब्दील किया जा सके।

संदर्भ

पुस्तकें और जर्नल

1. पासवान एस, जयदेव पी. *इनसाइक्लोपीडिया ऑफ दलित इन इंडिया.* नई दिल्ली: कलपाज पब्लिकेशन; 2002.
2. राधाकृष्णन एस, कुमारी आर. *इम्पैक्ट ऑफ एजुकेशन ऑन शेड्यूल कास्ट यूथ इन इंडिया: बिहार और मध्य प्रदेश में सामाजिक परिवर्तन का एक अध्ययन.* केरल, इंडिया: इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड गवर्नमेंट; 1989. पृ. 139.
3. सिंह ध. उत्तर भारत में सबसे हाशिए पर रहने वाली एक जाति की सामाजिक-जनसांख्यिकी स्थिति. *डेमोग्राफी इंडिया.* 2016;45(1&2):117-130.
4. शर्मा स. भारतीय ज्ञान परंपरा और अनुसंधान. In: चंदानी ए, दिवेकर आर, नायक जेके, संपादक. *भारत की $5 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था का लक्ष्य.* 2022. पृ. 359-364. उपलब्ध: https://doi.org/10.1007/978-981-16-7818-9_18

वेबसाइट्स

1. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. भारतीय ज्ञान प्रणाली [इंटरनेट]. उपलब्ध: https://www.education.gov.in/nep/indian-knowledge-systems#:~:text=The%20Indian%20Knowledge%20Systems%20comprise,health%2C%20manufacturing%2C%20and%20commerce.
2. भारत के रजिस्ट्रार जनरल और जनगणना आयुक्त का कार्यालय. भारत की जनगणना [इंटरनेट]. उपलब्ध: https://censusindia.gov.in/census.website/
3. सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार. अनुसूचित जाति के लिए योजनाएं [इंटरनेट]. उपलब्ध: https://socialjustice.gov.in/common/76750
4. सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार. *अनुसूचित जाति कल्याण कार्यक्रम रिपोर्ट* [इंटरनेट]. 2017. उपलब्ध: https://socialjustice.gov.in/public/ckeditor/upload/62201723632649.pdf
5. सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, भारत सरकार. *भारत में महिला और पुरुष, अध्याय 1* [इंटरनेट]. उपलब्ध: https://www.mospi.gov.in/sites/default/files/reports_and_publication/statistical_publication/social_statistics/WM17Chapter1.pdf
6. केंद्रीय विश्वविद्यालय गुजरात. *अनुसूचित जाति शिक्षा पर रिपोर्ट* [इंटरनेट]. उपलब्ध: https://www.cug.ac.in/pdf/202311300736131c5548d0aa.pdf

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2024 सुमन पाल, डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/